अध्याय 29

अय्यूब का ''अच्छे पुराने दिनों'' को तरसना

जैसे जैसे हमारी उम्र बढ़ती है वैसे वैसे हम अपनी जवानी के ''अच्छे पुराने दिनों'' को याद करते और तरसते हैं। अध्याय 29 में अय्यूब ने अपने और अपने परिवार पर आने वाली विपत्तियों के आने से पहले के अपने सुखद जीवन का वर्णन किया। यह तस्वीर अय्यूब 1:1-5 के जैसी ही है।

अध्याय 29 से 31 के सम्बन्ध में, फ्रांसिस आई. एंडरसन ने कहा,

> इस लम्बे भाषण [अध्याय 29-31] को कई विद्वानों द्वारा अपने आप से बातें करना बिल्कुल वैसा कहना अनुचित है। अय्यूब की बात पूरी बहस का महत्वपूर्ण भाग है। मित्र अब चाहे खामोश हो गए हों, पर अय्यूब अपने आप से बातें नहीं कर रहा है। यह सार्वजनिक रूप उसके निष्कलंक होने का अंतिम दावा है।[1]

अय्यूब की समृद्धि जब परमेश्वर निकट था (29:1-6)

[1]अय्यूब ने फिर अपनी गूढ़ बात उठाई और कहा, [2]''भला होता कि मेरी दशा बीते हुए महीनों की सी होती, जिन दिनों में परमेश्वर मेरी रक्षा करता था, [3]जब उसके दीपक का प्रकाश मेरे सिर पर रहता था, और उस से उजियाला पाकर मैं अन्धेरे में चलता था। [4]वे तो मेरी जवानी के दिन थे, जब परमेश्वर की मित्रता मेरे डेरे पर बनी रहती थी। [5]उस समय तक तो सर्वशक्तिमान मेरे संग रहता था, और मेरे बाल-बच्चे मेरे चारों ओर रहते थे। [6]तब मैं अपने पगों को मलाई से धोता था और मेरे पास की चट्टानों से तेल की धाराएँ बहा करती थीं।''

आयत 1. अय्यूब ने फिर अपनी गूढ़ बात उठाई और कहा जो मित्रों के खामोश हो जाने के बाद अय्यूब के एक के बाद एक अंतिम भाषणों का संकेत देता है। इब्रानी भाषा में यह शब्द 27:1 के बाद मिलते हैं।

आयत 2. ''भला होता कि मेरी दशा बीते हुए महीनों की सी होती, जिन दिनों में परमेश्वर मेरी रक्षा करता था।'' अय्यूब उन दिनों को याद करता था जिनका पुस्तक के आरम्भ में वर्णन किया गया (1:1-5)। ऐसा देखा गया है कि अय्यूब के पूरे भाषणों में अपने दुःख सहने पर उसके मन में परमेश्वर से अलग होने का बड़ा बोध था। ''रक्षा करता'' (*shamar, शामार*) का अर्थ किसी की ''रखवाली'' या ''सुरक्षा'' करना है।[2] यह उस पर बड़ी ''सतर्कता'' बरतने के लिए है।[3] इसी शब्द का इस्तेमाल हारून के सुन्दर आशीष वचन में किया गया है: ''यहोवा तुझे

आशीष दे और तेरी *रक्षा करे*; यहोवा तुझ पर अपने मुख का प्रकाश चमकाए, और तुझ पर अनुग्रह करे; यहोवा अपना मुख तेरी ओर करे, और तुझे शांति दे'' (गिनती 6:24-26; महत्व जोड़ें)।

आयत 3. दीपक और **उजियाला** परमेश्वर की आशिषों और अगुआई के लिए प्रतीकात्मक शब्द हैं (3:4; 18:6; 22:28; 25:3; 33:28)। ''दीपक'' जैतून के तेल और बत्ती वाला मिट्टी का छोटा दीया होता था। तेल बत्ती में जज़ब हो जाता था जिससे यह जलती रहती थी।

आयत 4. ''वे तो मेरी जवानी के दिन थे, जब परमेश्वर की मित्रता मेरे डेरे पर बनी रहती थी।'' ''मेरी जवानी के दिन'' मूलतया ''मेरे पतझड़ के दिन'' है *chorep* (*चोरेप*) का अर्थ कटनी के समय की सर्दी है जब फसलें पूरी तरह से पक जाती थीं। ''मित्रता'' (*sod, सोड*) का अर्थ है ''सलाहकार'' ''अंतरंग सम्पर्क'' या ''विश्वासपात्रों का घेरा।''[4] सुलैमान ने कहा कि परमेश्वर ''अपना भेद सीधे लोगों पर खोलता [*sod, सोड*]'' है (नीतिवचन 3:32)।

आयत 5. एक बच्चे को खो देने का विचार ही चूर-चूर कर डालने वाला है। एक दम से दस **बाल बच्चे** खो देने का विनाश लगभग हर परिवार के लिए पहाड़ टूटने जैसा होगा। इससे भी अय्यूब को लगा कि **सर्वशक्तिमान** उससे विमुख हो गया है।

आयत 6. ''तब मैं अपने पगों को मलाई से धोता था और मेरे पास की चट्टानों से तेल की धाराएँ बहा करती थीं।'' रूपक में यहां आशिषों के बहुतायत में होने का संकेत है। (देखें व्यवस्थाविवरण 32:13, 14; 33:24)। ''भलाई'' के लिए शब्द, *chem'ah* (*चेमाह*), का अनुवाद 20:17 में ''यही'' हो सकता है। अय्यूब की गाय और बकरियां किसी समय बहुत दूध देती थीं (TEV; NRSV; NLT), जिससे ''मलाई'' बन जाती थी (NIV; NKJV; NJPSV)। यह इतना अधिक हुआ करता था कि प्रतीकात्मक अर्थ में कहें तो अय्यूब ''अपने पैर मलाई से धोता था।''[5]

''चट्टानों'' सम्भवतया पत्थर घड़कर बनाए गए कोल्हू को कहा गया है।[6] ऐसा एक 1969 में ग्रीष्मकाल की खुदाइयों के दौरान मिला था। इसमें दोनों ओर से पोता गया होता था ओर इसमें कटोरे के आकार का एक निशान जिसमें पके हुए जैतूनों के मसले जाने के बाद जैतून का तेल गिर सकता था। जैतून का ''तेल'' खाना बनाने, ईंधन और मरहम-पट्टी करने के लिए आम तौर पर इस्तेमाल किया जाता था।

अय्यूब की आदर वाली पुरानी स्थिति (29:7-11)

[7]''जब जब मैं नगर के फाटक की ओर चलकर खुले स्थान में अपने बैठने का स्थान तैयार करता था, [8]तब तब जवान मुझे देखकर छिप जाते, और पुरनिये उठकर खड़े हो जाते थे। [9]हाकिम लोग भी बोलने से रुक जाते, और हाथ से मुँह बन्द किए रहते थे। [10]प्रधान लोग चुप रहते थे और उनकी जीभ तालू से सट जाती थी। [11]क्योंकि जब कोई मेरा समाचार सुनता, तब वह मुझे धन्य कहता था, और जब कोई मुझे देखता, तब मेरे विषय साक्षी देता था।''

आयत 7. नगर के फाटक और **खुले स्थान** वे जगहें होती थी जहां पर नगर का सरकारी काम काज होता था और वादियों के बीच निर्णय किए जाते थे। दाऊद का पुत्र अबशालोम न्याय

को बिगाड़ने और दाऊद की प्रजा के मन में अपनी जगह बनाने के लिए नगर के फाटक के पास खड़ा रहता था (2 शमूएल 15:2-6)। एज्रा भी यहोवा की व्यवस्था को ऐसी जगह पर पढ़ा करता था जहां लोग इकट्ठा हुए हों (नहेम्याह 8:1-8)। बोआज ने बैतलहम के फाटक पर इकट्ठा हुए लोगों के सामने एक रिश्तेदार के छुटकारे का अधिकार पाया (रूत 4:1-10)।

1969 में गेजेर में हुई खुदाइयों में एक सुलेमानी फाटक मिला जिसके दोनों ओर तीन तीन भाले और तख्ते थे। यह स्पष्ट है कि यह जगह नगर का कारोबार किए जाने की जगह थी। ऐसे ही फाटक इस्राएल के मगिद्दो और हज़ोर जैसे अन्य नगरों की खुदाइयों के दौरान भी मिले हैं।[7]

आयतें 8-10. इन आयतों में दिखाया गया है कि किसी समय समाज में अय्यूब का बड़ा सम्मान था। ''**तब जवान मुझे देखकर छिप जाते, और पुरनिये उठकर खड़े हो जाते थे।**'' उनके इन कामों से पता चलता है कि एक अगुवे के रूप में अय्यूब एक प्रतिष्ठित आदमी था। समाज में अय्यूब को अपना अगुआ मानने के बाद **हाकिम लोग भी बोलने से रुक जाते, और हाथ से मुँह बन्द किए रहते थे**, जो कि भयभीत और शांत होने की एक मुद्रा थी (21:5 पर टिप्पणियां देखें)।

आयत 11. अय्यूब की सलाह को ध्यान से सुनने के बाद उसे धन्य कहते और मानते थे कि उसके निर्णय बिल्कुल सही होते हैं।

दूसरों के लिए अय्यूब की यथार्थ चिंता (29:12-17)

12''**क्योंकि मैं दोहाई देनेवाले दीन जन को, और असहाय अनाथ को भी छुड़ाता था।**
13**जो नष्ट होने पर था मुझे आशीर्वाद देता था, और मेरे कारण विधवा आनन्द के मारे गाती**
थी। 14**मैं धर्म को पहिने रहा, और वह मुझे ढाँके रहा; मेरा न्याय का काम मेरे लिये बागे और**
सुन्दर पगड़ी का काम देता था। 15**मैं अन्धों के लिये आँखें, और लंगड़ों के लिये पाँव ठहरता**
था। 16**दरिद्र लोगों का मैं पिता ठहरता था, और जो मेरी पहिचान का न था उसके मुक़द्दमे**
का हाल मैं पूछताछ करके जान लेता था। 17**मैं कुटिल मनुष्यों की डाढ़ें तोड़ डालता, और**
उनका शिकार उनके मुँह से छीनकर बचा लेता था।''

आयत 12. समाज में अय्यूब की पहले की स्थिति (29:7-11) सीधे तौर पर उसके **दीन** और **अनाथ** के साथ उसके परोपकारी व्यवहार से सम्बन्धित है। एलीपज ने अय्यूब पर तीनों को सताने का आरोप लगाया था (22:6-9), और यह एक ऐसा आरोप था जिसका अय्यूब ने तीखा विरोध किया। इसके बजाय अय्यूब जैसा परमेश्वर चाहता था वैसा ही समाज में अपने प्रभाव का इस्तेमाल करता था (देखें भजन संहिता 72) यानी वह असहाय लोगों की पुकार सुनकर उन्हें **छुड़ाता** था।

आयत 13. जो नष्ट होने पर था हो या **विधवा**, दोनों को अय्यूब की ओर से सांत्वना और सहायता मिला करती थी। वे उसे धन्य कहते और उसकी सहायता पाकर आनन्दित होते थे।

आयत 14. धर्म और **न्याय** अय्यूब के **बागे और सुन्दर पगड़ी का काम** करते थे जिसे लोग देख सकते थे। वह बिना पक्षपात के नैतिक मानकों वाला निर्णय देता था। **ऐसे गुण पहन**ने की अवधारणा नये नियम में भी मिलती है। पौलुस ने रोमियों से आग्रह किया कि ''अंधकार के कामों को त्यागकर ज्योति के हथियार बांध लो'' (रोमियों 13:12), और

''प्रभु यीशु मसीह को पहन लो और जीवन की अभिलाषाओं को पूरा करने का उपाय न करो'' (रोमियों 13:14)। इफिसुस के लोगों से उसने कहा, ''परमेश्वर के सारे हथियार बांध लो'' (इफिसियों 6:11)। कुलुस्सियों को उसने कहा, ''बड़ी करुणा, और भलाई, और दीनता, और नम्रता, और सहनशीलता धारण करो'' (कुलुस्सियों 3:12)।

आयतें 15, 16. अंधों, लंगड़ों और दरिद्र लोगों द्वारा अय्यूब को पिता समान माना जाता था। उनकी सहायता के लिए आने के लिए उसे उन्हें निजी तौर पर जानने की आवश्यकता नहीं होती थी। एस. एस. रोअले ने कहा,

> अय्यूब अद्भुत रीति से बड़े दिल वाला आदमी है। हो सकता है कि कोई उन गरीबों का जिसे वह जानता हो बोझ ले। पर उन अजनबियों के मामलों का पता लगाना जिन्हें न्याय से वंचित किया गया हो और यह देखना कि उनके साथ निष्पक्ष व्यवहार हो, बहुत कम देखने को मिलता था। अय्यूब अपनी शक्ति और प्रभाव का इस्तेमाल स्वार्थी उद्देश्यों के लिए नहीं बल्कि धार्मिकता के लिए करता था।[8]

आयत 17. अय्यूब **कुटिल मनुष्यों** के उनके शिकार लोगों को लूटने के अयोग्य करके उन**की दाढ़ें तोड़ डालता** था। यह रूपक अपराध और अन्याय का सामना करने के लिए अपनाए गए उसके कठोर तरीकों का पता देता है।

अय्यूब का विश्वास कि वह शान से मरेगा (29:18-20)

[18]''तब मैं सोचता था, 'मेरे दिन बालू के किनकों के समान अनगिनत होंगे, और अपने ही बसेरे में मेरा प्राण छूटेगा। [19]मेरी जड़ जल की ओर फैली, और मेरी डाली पर ओस रात भर पड़ी रहेगी, [20]मेरी महिमा ज्यों की त्यों बनी रहेगी, और मेरा धनुष मेरे हाथ में सदा नया बना रहेगा।'''

आयतें 18-20. अपने परिवार की विपत्तियों और अपनी व्यक्तिगत विपत्ति से पहले अय्यूब को लगता था कि वह बहुत देर तक, शांतिपूर्वक और समृद्ध जीवन जीएगा। ''बसेरे'' (*qen, क़ेन*) उसके अपने घर की सुरक्षा और सुविधा को दर्शाता है। अय्यूब को लगता था कि वह शांति से, अपनी पत्नी, अपने बच्चों और अपने घर के अन्य लोगों के बीच मरेगा।

''मेरी जड़ जल की ओर फैली, और मेरी डाली पर ओस रात भर पड़ी रहेगी।'' भजन संहिता 1 में प्रतिज्ञा की गई आशीष की कुछ झलक आयत 19 में मिलती है। भजनकार ने घोषणा की कि जो व्यक्ति परमेश्वर की व्यवस्था में आनन्दित रहता है ''वह उस वृक्ष के समान है, जो बहती नालियों के किनारे लगाया गया है। और अपनी ऋतु में फलता है, और जिसके पत्ते कभी मुरझाते नहीं। इसलिये जो कुछ वह पुरुष करे वह सफल होता है'' (भजन संहिता 1:3)।

अय्यूब की सलाह मांगी जाती थी (29:21-25)

[21]''लोग मेरी ओर कान लगाकर ठहरे रहते थे और मेरी सम्मति सुनकर चुप रहते थे।

[22]जब मैं बोल चुकता था, तब वे और कुछ न बोलते थे, मेरी बातें उन पर मेंह के समान बरसा करती थीं। [23]जैसे लोग बरसात की वैसे ही मेरी भी बाट देखते थे; और जैसे बरसात के अन्त की वर्षा के लिये वैसे ही वे मुँह पसारे रहते थे। [24]जब उनको कुछ आशा न रहती थी तब मैं हँसकर उनको प्रसन्न करता था; और कोई मेरे मुँह को बिगाड़ न सकता था। [25]मैं उनका मार्ग चुन लेता, और उन में मुख्य ठहरकर बैठा करता था, और जैसा सेना में राजा या विलाप करनेवालों के बीच शान्तिदाता, वैसा ही मैं रहता था।''

आयतें 21-25. इस पद्य के अपने समाज से उपयुक्त आदर पाने वाले व्यक्ति की तस्वीर जोड़ी हो सकती है। लोग अय्यूब की **सम्मति** धीरज से और शांति से **सुनकर** चुप रहते। उसकी **बातें** उनके लिए **मेह के समान** ताजगी भरी होती थीं (देखें नीतिवचन 16:15)। इब्रानी शब्द *malqosh* (*मल.क़ोश*) मार्च अप्रैल के लिए होने वाली वर्षा के लिए विशेष शब्द है। सर्दी के रूखे मौसम में पौधों के लिए यह वर्षा आवश्यक होती थीं।

अय्यूब प्रेरणादायक व्यक्ति का काम करता था जो किसी को उदास देखने पर **हँसकर** उसका खोया आत्मविश्वास लौटा ले आता था। उसके **मुंह** से उन्हें अपने संघर्षों पर काबू पाने और सही मार्ग चुनने के लिए दिलेरी मिलती है।

अय्यूब को अपने लोगों के बीच **मुख्य** व्यक्ति के रूप में या **जैसा सेना में राजा** होता है, वैसा चुना गया था। ये शब्द हैरान करने वाले हैं क्योंकि पुस्तक के आरम्भ में उसे ''पूर्वी देशों के लोगों में सबसे बड़ा'' बताया गया है (1:3)।

प्रासंगिकता

''अच्छे पुराने दिन'' (अध्याय 29)

विनाशकारी विपत्तियों से परेशान होने के बाद अय्यूब ''अच्छे पुराने दिनों'' को याद करता था। अय्यूब का यह सब नुक्सान चाहे रातों रात हुआ था पर उसकी परिस्थिति और आज की बूढ़ा होने की प्रक्रिया लगभग एक जैसी है। बूढ़ा होते होते हमारा बहुत कुछ छिन जाता है जो कभी हमारे जीवन का भाग हुआ करता था। शायद हमें ये अच्छे लगते हैं या हो सकता है कि हम उनकी कद्र करते हैं। जो भी, अब उसे उनकी बड़ी याद आती है।

बच्चे और खुशहाली के दिन छिन सकते हैं (29:1-6)। अय्यूब को वह समय याद आता है जब उसे विशेषकर लगता था कि उसकी परमेश्वर के साथ निकटता है। उस समय का वर्णन उसने ''जब परमेश्वर की मित्रता [उसके] डेरे पर बनी रहती थी'' (29:4) के रूप में किया। उसे वे दिन बड़े याद आते थे जब उसके बच्चे उसके आस-पास घूमते थे और उसे बड़ा आनन्द मिलता था (29:5)। परन्तु दसों के दसों बच्चे एक ही समय में खत्म हो गए। अय्यूब को उन आर्थिक आशिषों की भी बड़ी याद आती थी जो उसे कभी मिली हुई थी: ''तब मैं अपने पगों को मलाई से धोता था और मेरे पास की चट्टानों से तेल की धाराएँ बहा करती थीं'' (29:6)। अब वह सब छिन चुका था।

जिन माता-पिता के बच्चे छिन जाते हैं सचमुच में उनके लिए यह बड़ा दु:ख और घाटा होता है। वे अपने दु:ख से तो ''उबर पाते'' नहीं, पर उम्मीद है कि वे अपने बच्चों की पुरानी

यादों के सहारे जीवन काटना सीख लेते हैं। बूढ़े होने पर सेवानिवृत होने के बाद कुछ लोगों के पास अपनी गुजर-बसर करने के भी पैसे नहीं होते। पैसे की कमी उनके जीवनयापन को बहुत प्रभावित करती है जिससे उन्हें कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है।

दूसरों द्वारा आदर करना बंद हो सकता है (29:7-11)। अय्यूब का इतना नुक्सान होने के बाद उसकी गिनती अपने समाज के प्रमुख लोगों में हुआ करती थी। जब वह नगर के फाटक पर पहुंचता जहां बुजुर्ग इकट्ठा हुआ करते थे तो जवान उसको देखकर छिप जाते थे, बूढ़े लोग खड़े हो जाते और हाकिम खामोश हो जाते थे (29:8-10)। परन्तु यहां पर अय्यूब का बड़ा अपमान हो रहा था और उसे ताने दिए जा रहे थे।

बहुत से कथानक हैं जिनमें आज लोग उनका आदर करना बंद कर सकते हैं पर वे परमेश्वर के वफ़ादार रहते हैं। पश्चिमी संस्कृति जहां अधिक भ्रष्ट हो गई है वहीं सच्चाई के लिए खड़े होकर लोगों के उपहास का सामना किया जा सकता है। जैसे-जैसे कोई बूढ़ा होता है वैसे-वैसे उसकी स्मरण शक्ति कमज़ोर हो सकती है जिससे नेतृत्व करने की उसकी स्थिति प्रभावित होती है। इसके अलावा हो सकता है कि बूढ़े व्यक्ति के साथी मर चुके हों और अब वह अकेला रह गया हो और नई पीढ़ी उसके बारे में इतना न जानती हो।

परोपकार करने की हमारी योग्यता खो सकती है (29:12-17)। अय्यूब ने दीनों, अनाथों की देखभाल करके अपनी सम्पत्ति और अपने रुतबे का सही इस्तेमाल किया था (29:12, 13)। उसने अंधों, लंगड़ों और दरिद्र लोगों की सेवा की थी। अय्यूब परदेशियों की सहायता करने वाला, सच्चाई का पता लगाने के लिए मुकद्दमे की तह तक जाने वाला आदमी था (29:15, 16)। वह दुष्टों से प्रताड़ित होकर निर्दोष लोगों को बचा लेता है (29:17)। परन्तु जरूरतमंद लोगों के साथ ऐसा परोपकार करने के लिए अब अय्यूब के पास अपना कोई रूतबा नहीं है।

लोगों के बूढ़ा हो जाने पर हो सकता है कि उनके पास सेवा करने के पहले जैसे आर्थिक संसाधन या शारीरिक क्षमता न हो। थोड़े से पैसे से गुजारा करने के बाद हो सकता है कि वह कलीसिया में उतने पैसे न दे सकते हों जितने पहले दिया करते थे। सेहत खराब होने पर हो सकता है कि वे परोपकार का कार्य वैसे न कर सकते हों जैसे पहले किया करते थे।

सम्मानजनक मृत्यु की हमारी आशा खो सकती है (29:18-20)। विपत्ति से पीड़ित होने से पहले अय्यूब को लगता था कि वह बहुत देर तक जीएगा और उसका जीवन बड़ा खुशहाल होगा और अपने घर के लोगों के बीच शांति से मरेगा। परन्तु उसके सब बच्चे मर चुके थे और उसका स्वास्थ्य रातों-रात गिर चुका था। ''शान'' से मरने की उसकी सारी आशाएं जाती रही थीं (29:20)।

कुछ मसीही लोगों की मृत्यु बिना कष्ट या थोड़े कष्ट के साथ हो जाती है। एक बुजुर्ग मसीही महिला ने प्रभु की सेवा में लम्बा जीवन जीया। शायद ही हो कि वह कभी बीमार हुई हो या डॉक टर के पास गई हो। प्रभु के एक दिन उसने प्रात:काल की आराधना सेवा में भाग लिया, फिर दोपहर को गोदभराई के कार्यक्रम में भाग लिया और शाम को फिर आराधना में आई। उसी रात वह नींद में ही चल बसी। जीना और मरना कितना शानदार है! परन्तु बहुत से लोगों के लिए चाहे वे मसीही ही क्यों न हो, ऐसा नहीं होता है। बहुत से लोगों ने अपने जीवन के अंत में बड़ी पीड़ा सही। कई तो सालों तक बीमार रहते हैं। ऐसी परिस्थितियां ''शान'' वाली बिल्कुल नहीं होतीं।

सम्मति देने का हमारा अवसर खो सकता है (29:21-25)। एक समय था जब बूढ़े हों या जवान, सब अय्यूब का मुंह देखा करते थे। वे उसकी सयानी सलाह को बड़ी उत्सुकता से

सुनते थे, जिसकी तुलना उसने बरसात की वर्षा से मिलने वाली ताज़गी से की (29:23)। वह प्रेरणादायक लीडर था। जो मायूस मनों को सही मार्ग पर चलते रहने की प्रेरणा देकर उत्साहित करता था (29:24)। अय्यूब शोक करने वालों को दिलासा देता था। (29:25)।

बुढ़ापा आ जाने पर हम पहले की तरह सलाह देने की स्थिति में नहीं होते हैं। प्राचीनों (ऐल्डरों), प्रचारकों, सलाहकारों, शिक्षकों के रूप में सेवा करने वालों को कई बार लगता है कि वे ऐसी स्थिति में है कि दूसरे लोग उन से सलाह मांगते हैं या उनसे कुछ जानकारी लेते हैं। अलग-अलग पदों से सेवानिवृत होने पर बड़ी विनम्रता चाहिए क्योंकि बहुत कम लोग सलाह मांगते हैं।

सारांश। अय्यूब अपनी दुर्दशा से परेशान था और उसे अपने ''अच्छे पुराने दिन'' रह रह कर याद आते थे। आज भी बहुत से लोग उस समय को याद करते हैं जब उनके परिवार के लोग उनके आस-पास होते थे, जब उनके पास अधिक पैसा और अच्छी सेहत थी, और समाज में बड़ा नाम था। बुढ़ापा आसान नहीं है। किसी ने टिप्पणी की है, ''आम तौर पर 'सुनहरी वर्ष' इतने सुनहरी नहीं होते।''

मसीही होने के नाते हमें हर परिस्थिति में संतुष्टि ढूंढ़ना आवश्यक है। पौलुस ने लिखा कि अपनी हर परिस्थिति में, चाहे वह जैसी भी क्यों न हो, उसने संतुष्ट रहना सीख लिया था। उसने बताया:

> मैं दीन होना भी जानता हूं और बढ़ना भी जानता हूं; हर एक बात और सब दशाओं में मैं ने तृप्त होना, भूखा रहना, और बढ़ना-घटना सीखा है। जो मुझे सामर्थ देता है उस में मैं सब कुछ कर सकता हूं (फिलिप्पियों 4:12, 13)।

पौलुस ने अपने जीवन में यीशु की सेवा करके शांति पाई, परिस्थितियां चाहे कैसी भी क्यों न हों। उसका विश्वास था कि यीशु उसे जीवन के संघर्षों का सामना साहस और रचनात्मकता के साथ करने में सहायता करेगा।

हमें यह भी समझना आवश्यक है कि यह संसार हमारा घर नहीं है और यह जीवन थोड़ी देर का है। पौलुस के शब्दों से हमें दिलेरी मिलती है:

> इसलिए हम हियाव नहीं छोड़ते; यद्यपि हमारा बाहरी मनुष्यत्व नाश भी होता जाता है, तौभी हमारा भीतरी मनुष्यत्व दिन प्रतिदिन नया होता जाता है। क्योंकि हमारा पल भर का हलका सा क्लेश हमारे लिए बहुत ही महत्वपूर्ण और अनन्त महिमा उत्पन्न करता जाता है। और हम तो देखी हुई वस्तुओं को नहीं परन्तु अनदेखी वस्तुओं को देखते रहते हैं, क्योंकि देखी हुई वस्तुएं थोड़े ही दिन की हैं, परन्तु अनदेखी वस्तुएं सदा बनी रहती हैं। क्योंकि हम जानते हैं, कि जब हमारा पृथ्वी पर का डेरा सरीखा घर गिराया जाएगा तो हमें परमेश्वर की ओर से स्वर्ग पर हमें ऐसा भवन मिलेगा, जो हाथों से बना हुआ घर नहीं, परन्तु चिरस्थाई है (2 कुरिन्थियों 4:16-5:1)।

डी. स्टिवर्ट

टिप्पणियां

[1]फ्रांसिस आई. एंडरसन, *अय्यूब, ऐन इंट्रोडक्शन ऐंड कॉमैंट्री,* टिंडेल ओल्ड टैस्टामैंट कॉमैंट्रीस [डाउनर्स

ग्रोव, इलिनोय: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1974], 230)। [2]लुडविग कोहलर ऐंड वाल्टर बामगार्टनर, द *हिब्रू ऐंड अरेमिक लेक्सिकन ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामैंट,* स्टडी एडिशन, अनु. व सम्पा. एम. ई. जे. रिचर्डसन (बोस्टन: ब्रिल, 2001), 2:1581-85. [3]होमेर हेली, *ए कॉमैंट्री ऑन अय्यूब* (पृष्ठ नहीं: रिलिजियस सप्लाई, Inc., 1994), 249. [4]कोहलर और बामगार्टनर, 1:745. [5]जॉन ई. हार्टले, द *बुक ऑफ़ अय्यूब,* द न्यू इंटरनेशनल कॉमैंट्री ऑन द ओल्ड टैस्टामैंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 388. [6]राल्फ गोवर, द *न्यू मैनर्स ऐंड कस्टम्स ऑफ़ बाइबल टाईम्स* (शिकागो: मूडी प्रैस, 1987), 114-17 में उदाहरण और फोटो देखें। [7]देखें एल्फ्रेड जे. होर्थ, *आरक्योलॉजी ऐंड द ओल्ड टैस्टामैंट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक, 1998), 286-88. [8]एच. एच. रोअले, *अय्यूब,* द सेंचुरी बाइबल, न्यू सीरीज़ (ग्रीनवुड, साउथ कैरोलाइना: द अटिक प्रैस, Inc., 1970), 238.